17 अप्रैल 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 2 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महावीर जयन्ती सानन्द संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल समारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनाँक 4 अप्रैल को प्रात: ध्वजारोहण टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ। उनके साथ ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नाच गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मंदिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयोजित सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई।

इस अवसर पर शहर में निकलने वाली मुख्य शोभायात्रा में भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर आधारित सुन्दर झांकी फैडरेशन महानगर जयपुर ने आयोजित की। **- सुरेन्द्र पाटनी**

महिला मण्डल का विशेष कार्यक्रम -

यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 5 अप्रैल को वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल द्वारा भगवान महावीर के संदेशों पर आधारित विचार गोष्ठी एवं अक्षय निधि का कार्यक्रम रखा गया। गोष्ठी में महिला मण्डल की अनेक सदस्याओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम की पुरस्कार राशि श्रीमती सुशीलाजी जैन अलवरवालों की ओर से दी गई। **- मंत्री, कमला भारिल्ल**

2. कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई। इस अवसर पर महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

यहाँ इन्द्रविहार में दि. जैन महासमिति द्वारा **'वर्तमान समस्याओं का समाधान महावीर के सिद्धांतों से'** विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने अपना वक्तव्य दिया।

3. उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फै. एवं महिला मण्डल नेमिनाथ कॉलोनी के संयुक्त तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के अवसर पर वी.वि.पाठशाला के बच्चों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही भगवान महावीर के सिद्धांतों पर आधारित गोष्ठी भी रखी गयी, जिसमें युवा फैडरेशन एवं महिला मण्डल के अनेक सदस्यों ने अपने वक्तव्य रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर ने किया। **- जिनेन्द्र शास्त्री**

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 30 मार्च 2012 को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: त्रिमूर्ति जिनमंदिर में जिनेन्द्र पूजन का आयोजन महाविद्यालय अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में स्वतंत्रभूषण शास्त्री, मयंक शास्त्री एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष के अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर दो सत्रों (दोपहर एवं रात्रि) में आयोजित समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पूनमचंदजी छाबड़ा, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ.दीपकजी वैद्य, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान, श्री दिलीपभाई शाह, श्री शान्तिलालजी अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित निशान्तजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने पाँच वर्षों के अनुभव सुनाते हुये महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया एवं स्वयं को अध्यात्म विद्या पढ़ने का विशेष सौभाग्यशाली विद्यार्थी बताते हुए इस विद्यालय में पढने हेतु अपने मित्रों/परिजनों को भेजने का संकल्प भी व्यक्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को भविष्य को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि ''अभी तक तो आप यहाँ पर अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे थे; परन्तु अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर उस शिक्षा का प्रयोग करना है।'' जब एक विद्यार्थी ने डॉ. भारिल्ल को 'दबंग' की उपाधि दी, तब डॉ. भारिल्ल ने यह उपाधि यह कहते हुए स्वीकारी कि 'दबंग' का तात्पर्य होता है निडर और उन्होंने (डॉ. भारिल्ल) ने बिना डरे तत्त्वज्ञान का प्रचार किया है, कर रहे हैं तथा वे जैनधर्म

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

92 – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पहला प्रवचन

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

यह रहस्यपूर्णचिट्ठी पण्डित टोडरमलजी की प्रथम रचना है। इस छोटी–सी रचना में जिनागम के अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया गयाहै। यही कारण है कि इसका नाम रहस्यपूर्णचिट्ठी रखा गया है।

यह चिट्ठी विक्रम संवत् १८११ में फाल्गुन कृष्ण पंचमी को मुलतान[१] नगरवासी अध्यात्मप्रेमी मुमुक्षु भाईयों के पत्र के उत्तर में लिखी गई थी। इसमें उन शंकाओं का समाधान है; जो शंकायें मुलतान नगरनिवासी भाई श्री खानचंदजी, गंगाधरजी, श्रीपालजी, सिद्धारथदासजी आदि मुमुक्षु भाइयों ने भेजी थीं।

चिट्ठी की शैली, प्रौढ़ता एवं इसमें प्रतिपादित गंभीर तत्त्वचिंतन देखकर प्रतीत होता है कि पण्डित टोडरमलजी अल्पवय में ही बहुश्रुत विद्वान एवं तात्त्विक विवेचक के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। दूर–दूर के लोग उनसे शंका–समाधान किया करते थे।

अरे, भाई! हम शास्त्र लिखते हैं और उन्हें चिट्ठियों जैसा भी महत्त्व नहीं मिलता और पण्डित टोडरमलजी ने एक चिट्ठी लिखी और वह शास्त्र बन गई। पिछले ढाई सौ वर्षों से शास्त्रसभाओं में शास्त्रों जैसी पढ़ी जा रही है, पूजी जा रही है।

चिट्ठी माने पत्र। पुराने जमाने में पत्रों को चिट्ठी ही कहा जाता था। पत्र एक व्यक्ति लिखता है और वह जिसके नाम लिखता है, उसे वहपढ़ता है; पर पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखा गया यह पत्र ढ़ाई सौ वर्ष से अब तक हजारों लोगों ने पढ़ा है और आगे भी इसीप्रकार पढ़ा जाता रहेगा।

आज यह चिट्ठी आचार्य कुन्दकुन्द के समयसारादि ग्रन्थराजों के साथ शास्त्र की गद्दियों पर विराजमान रहती है और उन्हीं के समान बड़े सम्मान के साथ शास्त्रसभाओं में पढ़ी जाती है।

इस पत्र की प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर आजकल कुछ लोग प्रकाशन के लोभ में इसप्रकार के पत्र लिखने लगे हैं; पर अभी तक तो किसी को ऐसी सफलता प्राप्त नहीं हुई; क्योंकि न तो उनमें कोई महत्त्वपूर्ण विषयवस्तु होती है और न वह गंभीरता ही होती है, जो उक्त कृति में पाई जाती है; बस भावुकता भरी बातें होती हैं; जिन्हें वे अध्यात्म और वैराग्य समझतेहैं।

पण्डित टोडरमलजी ने यह पत्र लिखते समय यह सोचा भी नहीं होगा कि यह पत्र इतना उपयोगी सिद्ध होगा, इतना लोकप्रिय होगा कि शास्त्रसभाओं में पढ़ा जावेगा। वस्तुत: बात यह है कि **यह पत्र इसमें प्रतिपादित विषयवस्तु के कारण इतना लोकप्रिय हो गया है।**

ऐसे पण्डित तो आपने इस जगत में बहुत देखे होंगे, जिन्होंने शास्त्र पढ़े हैं; पर ऐसे पण्डित दुर्लभ हैं कि जिन्होंने शास्त्रों के साथ आत्मा भी पढ़ा हो। ऐसे पण्डित भी कदाचित् मिल जायें कि जिन्होंने शास्त्र पढ़े हों और आत्मा भी पढ़ा हो; परन्तु ऐसे पण्डित मिलना अत्यन्त दुर्लभ हैं, जिन्होंने शास्त्र भी पढ़े हों, आत्मा भी पढ़ा हो और सारी दुनिया को भी पढ़ा हो, दुनिया की नब्ज भी वे जानते हों।

पण्डितप्रवर टोडरमलजी उन पण्डितों में से थे, जिन्होंने शास्त्र भी पढ़े थे, आत्मा भी पढ़ा था और दुनिया भी पढ़ी थी।

उनकी उस विद्वत्ता की निशानी यह चिट्ठी है, जिस पर हम यहाँ सात दिन चर्चा करेंगे। उस चर्चा में यह बात अपने आप सिद्ध हो जायेगी कि उन्होंने दुनिया भी पढ़ी थी, आत्मा भी पढ़ा था और शास्त्र भी पढ़े थे।

यह उस जमाने की चिट्ठी है, जिस जमाने में आवागमन के कोई साधन नहीं थे। लोग पैदल जाते थे या बैलगाड़ियों से जाते थे अथवा घोड़े से जाते थे। आने–जाने के साधन बहुत सीमित थे।

पण्डित टोडरमलजी जयपुर में रहते थे और मुलतान आजकल पाकिस्तान में है। आज वह परदेश हो गया है। उस जमाने में जयपुर से मुलतान और मुलतान से जयपुर आना–जाना कितना कठिन काम था – इसकी कल्पना आप कर सकते हैं।

उस जमाने में जबकि आवागमन के साधन अत्यन्त सीमित थे, पण्डित टोडरमलजी की प्रतिष्ठा इतनी दूर–दूर तक सारे देश में फैल गई थी कि लोग अपनी शंकाओं का समाधान करने के लिए उनके पास आते थे और पत्रों द्वारा उनसे समाधान प्राप्त करते थे।

साधर्मी भाई ब्र. रायमलजी अपनी **जीवन पत्रिका (आत्मकथा)** नामक कृति में लिखतेहैं–

''पीछैं केताइक दिन रहि टोडरमल्ल जैपुर के साहूकार का पुत्र, ताकै विशेष ज्ञान जानि वासूं मिलनें कै अर्थि जैपूर नगरि आए।

सो इहां वाकूं नहीं पाया....।

पीछैं सेखावाटी विषै सिंघाणां नग्र तहां टोडरमल्लजी एक दिली (दिल्ली) का बड़ा साहूकार साधर्मी ताकै समीप कर्म कार्य कै अर्थि वहां रहै, तहां हम गए अर टोडरमल्लजी सूं मिले, नाना प्रकार के प्रश्न कीए, ताका उत्तर एक गोमट्टसार नामा ग्रंथ की साखि सूं देते भए।

ता ग्रंथ की महिमा हम पूर्वै सुणी थी, तासूं विशेष देखी। अर टोडरमल्लजी का ज्ञान की महिमा अद्भुत देखी।[१]''

रहस्यपूर्णचिट्ठी से दस वर्ष बाद लिखी गई **इन्द्रध्वज विधान पत्रिका** नामक आमंत्रण पत्रिका में उन कुछ महत्त्वपूर्ण नगरों के नाम भी हैं, जिन नगरों में वह भेजी गई थी। ध्यान रहे यह चिट्ठी उदयपुर, दिल्ली, आगरा, भिण्ड, औरंगाबाद, इन्दौर, बीकानेर, जैसलमेर, मुलतान, विदिशा, भोपाल, गंजबासौदा जैसे दूरवर्ती नगरों में भेजी गई थी।

१. यह मुलताननगर तत्कालीन पंजाब प्रान्त का एक नगर है; जो आज लाहौर के निकट पाकिस्तान में है।

१. पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ ३३४–३३५

कैसे भेजी गई होगी – इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। उसके लिए आदमी को भेजना पड़ता था। वह आदमी पैदल जाता था।

उक्त आमंत्रण पत्रिका में लिखा गया था कि –

''सारां ही विषै भाईजी टोडरमलजी कै ज्ञान का क्षयोपशम अलोकीक है। जो गोमट्टसारादि ग्रंथां की संपूर्ण लाख श्लोक टीका बणाई और पांच सात ग्रंथां का टीका बणायवे का उपाय है।

सो आयु की अधिकता हुवां बणैंगा।

अर धवल महाधवलादि ग्रंथां के खोलबा का उपाय कीया वा उहां दक्षिण देस सूं पांच सात और ग्रंथ ताड़पत्रां विषै कर्णाटी लिपि मैं लिख्या इहां पधारे हैं, ताकूं मलजी बांचे हैं, वाका यथार्थ व्याख्यान करै हैं वा कर्णाटी लिपि मैं लिखि ले हैं।

इत्यादि न्याय व्याकरण गणित छंद अलंकार का याकै ज्ञान पाईए है। ऐसे पुरुष महंत बुद्धि का धारक ई काल विषै होनां दुर्लभ है।

तातैं यांसूं मिलें सर्व संदेह दूरि होइ है। घणी लिखबा करि कहा, आपणां हेत का बांछीक पुरुष सीघ्र आय आसूं मिलाप करो।[१]''

उक्त कथनों से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि छोटी–सी उम्र में भी उनकी कितनी प्रतिष्ठा थी।

रहस्यपूर्णचिट्ठी का प्रारंभिक अंश इसप्रकार है –

''सिद्ध श्री मुलताननगर महा शुभस्थान में साधर्मी भाई अनेक उपमा योग्य अध्यात्मरसरोचक भाई श्री खानचन्दजी, गंगाधरजी, श्रीपालजी, सिद्धारथदासजी, अन्य सर्व साधर्मी योग्य लिखी टोडरमल के श्री प्रमुख विनय शब्द अवधारण करना।

यहाँ यथासम्भव आनन्द है, तुम्हारे चिदानन्दघन के अनुभव से सहजानन्द की वृद्धि चाहिए।

अपरंच तुम्हारा एक पत्र भाईजी श्री रामसिंहजी भुवानीदासजी पर आया था, उसके समाचार जहानाबाद से मुझको अन्य साधर्मियों ने लिखे थे।

सो भाईजी, ऐसे प्रश्न तुम सरीखे ही लिखें। इस वर्त्तमानकाल में अध्यात्मरस के रसिक बहुत थोड़े हैं। धन्य हैं जो स्वात्मानुभव की बात भी करते हैं। वही कहा है –

तत्प्रति प्रीतिचित्तेन येन वार्तापि हि श्रुता।
निश्चितं स भवेद्भव्यो भाविनिर्वाणभाजनम्।।[२]

जिस जीव ने प्रसन्नचित्त से इस चेतनस्वरूप आत्मा की बात भी सुनी है, वह निश्चय से भव्य है। अल्पकाल में मोक्ष का पात्र है।''

यद्यपि यह पत्र पण्डितजी ने उन लोगों के नाम से लिखा था, जिन लोगों के नाम उस पत्र में थे, जिनके द्वारा प्रश्न पूछे गये थे; तथापि पण्डितजी यह अच्छी तरह जानते थे कि ये प्रश्न मुलताननगर के जिनमंदिर में चलनेवाली शास्त्रसभा में चर्चित प्रश्न हैं। अत: उनके उत्तर भी शास्त्रसभा में अवश्य पढ़े जावेंगे।

इसप्रकार यह रहस्यपूर्णचिट्ठी मुलतान जैन समाज के अध्यात्मरस–रोचक साधर्मी भाई–बहिनों के नाम थी। यही कारण है कि वे लिखते हैं कि टोडरमल्ल का श्री प्रमुख विनय शब्द अवधारण करना। तात्पर्य यह है कि सभी को यथायोग्य अभिवादन कहना।

पुराने जमाने में इसप्रकार के सामूहिक पत्रों के अन्त में एक दोहा लिखने की परम्परा थी; जो इसप्रकार है –

चिट्ठी बाँचत के समय, जो जन बैठे होंय।
है जुहारु सब जनन को, जो जी लायक होंय।।

तात्पर्य यह है कि यह पत्र पढ़ते समय जो लोग बैठे हों, उन सभी को यथायोग्य नमस्कार कहना; बड़ों को प्रणाम, छोटों को आशीर्वाद और बराबरीवालों को जयजिनेन्द्र कहना।

उक्त संदर्भ में एक रोचक संस्मरण सुनने योग्य है।

बात उस समय की है कि जब मैं १४–१५ वर्ष का रहा होऊँगा। मैं मुरैना विद्यालय में पढ़ता था और शास्त्री–न्यायतीर्थ होनेवाला था। गर्मियों की छुट्टी में अपने गाँव आया था।

शादियों की लग्नपत्रिका के साथ एक पत्र आता है; जो लग्नपत्रिका के साथ ही सभी समाज के समक्ष पढ़ा जाता है।

लग्नपत्रिका तो ब्राह्मण पण्डित पढ़ता था, पर पत्र हमारे पिताजी पढ़ा करते थे। उक्त संदर्भ में उनकी मास्टरी थी, वे बहुत लोकप्रिय थे।

मेरी समझ में नहीं आता था कि इसमें ऐसी क्या बात है ? पत्र तो सभी पढ़ सकते हैं, उनसे भी अच्छा पढ़ सकते हैं, पर....।

एक बार पिताजी घर पर नहीं थे; अत: यह काम मुझे मिला; क्योंकि मैं शास्त्री होने जा रहा था। पत्र मैंने पढ़ा, पर सबकुछ गड़बड़ हो गया। सभी पंच असंतुष्ट हो गये। इतने में पिताजी आ गये तो सभी लोगों ने अपना असंतोष व्यक्त किया। सभी कहने लगे कि इन्हें तो पत्र पढ़ना आता ही नहीं है। उसी पत्र को पिताजी से दुबारा पढ़वाया गया और सभी वाह–वाह कहने लगे।

वहाँ तो मैंने कुछ नहीं कहा; पर घर आकर पिताजी से कहा कि आपने जिन लोगों के नाम बोले, वे नाम तो पत्र में थे ही नहीं।

उन्होंने समझाया उस दोहे में लिखा था कि पत्र पढ़ते समय जो–जो लोग बैठे हों; उन सभी को हमारा जुहारु कहना; सो हमने जो–जो लोग बैठे थे, उनके नाम बोल दिये और कह दिया कि आप सबको जुहारु कहा है।

पिताजी की इसीप्रकार की चतुराई के कारण वे इतने अधिक लोकप्रिय थे।

उस समय चिट्ठियाँ व्यक्तियों को नहीं, समाज को लिखी जाती थीं; व्यक्ति की ओर से नहीं, समाज की ओर से लिखी जाती थीं। शादी की लग्न पत्रिका के साथ जानेवाली चिट्ठी भी लड़कीवालों के गाँव की समाज की ओर से लड़केवाले के गाँव की समाज को लिखी जाती थी।

इसीप्रकार यह रहस्यपूर्णचिट्ठी भी उन सभी आत्मार्थी भाई-बहिनों के नाम थी; जो उस काल में मुलतान दिगम्बर जिनमंदिर में चलनेवाली शास्त्रसभा के दैनिक श्रोता थे।

(क्रमश:)

१. पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पृष्ठ ३४४
२. पद्मनन्दिपंचविंशतिका (एकत्वाशीति : छन्द २३)

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

के सिद्धांतों से कभी हटे नहीं हैं, सिद्धांतों की कीमत पर कभी कोई समझौता नहीं किया; अत: डॉ. भारिल्ल ने 'दबंग' उपाधि को स्वीकार करते हुए, सभी विद्यार्थियों को भी दबंग बनने की प्रेरणा दी अर्थात् बिना डरे तत्त्वज्ञान का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

इस विदाई समारोह में शास्त्री द्वितीय वर्ष के सभी छात्रों ने पूरे कार्यक्रम में राजस्थानी ग्रामीण संस्कृति की थीम का प्रयोग करते हुए प्रवचन मण्डप को बहुत सुन्दर रूप से सजाया था।

इस बार के विदाई समारोह में पहली बार शास्त्री द्वितीय वर्ष द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों को उनकी विशेषता, पहचान आदि के आधार पर अलग-अलग अवार्ड दिये गये, जैसे - बेस्ट सिंगर, बेस्ट कवि, चिन्तनशील ऑफ द क्लास आदि।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों को ग्रंथ व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2011-12) के विशिष्ट पुरस्कारों की भी घोषणा की गई, जिसमें **आदर्श कक्षा** का पुरस्कार उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा को एवं **आदर्श विद्यार्थी** पुरस्कार नवीन जैन उज्जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) को दिया गया। इसी क्रम में प्रत्येक कक्षा में आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से अच्युतकांत जसवंतनगर, उपाध्याय वरिष्ठ से जिनेश सेठ मुम्बई, शास्त्री प्रथम वर्ष से साकेत जैन जयपुर, शास्त्री द्वितीय वर्ष से विवेक जैन भिण्ड, शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन खनियांधाना को आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार दिया गया।

साथ ही महाविद्यालय में अध्ययन करते हुए व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु विशिष्ट विद्यार्थी पुरस्कार की भी घोषणा की गई, जिसमें चिकित्सा सेवा के लिए सचिन जैन गड़खेड़ा (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं सुधर्म जैन बेलगांव (कर्नाटक) व प्रफुल्ल जैन शेडवाल (कर्नाटक) को अन्य कार्यों में विशिष्ट सहयोग हेतु पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का मङ्गलाचरण जीवेश जैन ने एवं संचालन विवेक जैन, ज्ञायक समैया, आशीष महाजन, जीवेश जैन, सनत जैन, मयंक जैन, कु.अनुभूति जैन एवं कु. नयना जैन ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. पिड़ावा (राज.) निवासी श्रीमती सूरजबाई का दिनांक 25 दिसम्बर 2011 को आत्मचिंतवन पूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री विवेकजी शास्त्री की दादीजी थीं।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 101/- रुपये प्राप्त हुये।

2. मुम्बई निवासी श्रीमती मंजुलाबेन किशोरभाई गोपाणी का दिनांक 15 फरवरी 2012 को 80 वर्ष की आयु में आत्म चिंतन-मनन करते हुए समताभाव से देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की परम भक्त थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 2500/- रुपये प्राप्त हुये।

3. गंजबासौदा-विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री बच्चूलालजी जैन का दिनांक 11 मार्च 2012 को 82 वर्ष की उम्र में आत्मचिंतवन करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, जयपुर शिविर में नियमित रूप से आकर लाभ लेते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. संजीव जैन गंजबासौदा के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

दर्शकों के पत्र

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) से श्रीमती कुसुमलता पाटनी जयपुर पंचकल्याणक के बारे में अपने भाव व्यक्त करते हुए लिखती हैं कि -

आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर।

सादर जयजिनेन्द्र,

हाल ही में हमें सपरिवार जयपुर पंचकल्याणक महोत्सव में शामिल होने का मौका मिला। इस पंचकल्याणक में बिलकुल नये तरीके से साज-सज्जा की गई एवं पूरी गरिमा से संपन्न किया गया, वह हमेशा याद रहेगा। आपने अपने वचनों द्वारा पंचकल्याणक महोत्सव के सम्बन्ध में ज्ञान दिया वह प्रशंसनीय है। आपका सहयोग भविष्य में भी होता रहे, इन्हीं भावनाओं सहित हमारी शुभकामनाएँ।

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127